International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 507-510

आदी और खड़ी बोली के अनुष्ठानिक लोक गीतों का तुलनात्मक अध्ययन

विजय कुमार यादव
शोध - छात्र, हिन्दी विभाग, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश, भारत।

सारांश
इस शोध पत्र में अरुणाचल प्रदेश की आदी जनजाति व खड़ीबोली के अनुष्ठान सम्बन्धी लोकगीतों का तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। हमेशा से ही लोकगीतों का सीधा सम्बन्ध प्रकृति से होता रहा है। पेड़, पौधे, वनस्पतियाँ आदि लोक गायक के मन को आकर्षित करते रहे है। लोक – गायक का मन भावुक होता है और वह प्रकृति के प्रेम में बह जाना चाहते है।

मूल शब्द : अनुष्ठानिक लोक गीत, गंगा नहान, गढ़गंगा, तुलसी, आश्विनी के महीने, साँझी, कुमारी कन्याएँ, शुक्ल पक्ष, पितृ – पक्ष, आराधना, मनोरंजन, मिरी, मन्त्र व टोने – टोटके।

प्रस्तावना

भारत पर्व- त्योहारों का देश है। हिन्दू समाज में विशेष रुप से हर माह कोई न कोई पर्व या त्योहार मनाया जाता है। इन पर्व- त्योहारों के माध्यम से हमारे धार्मिक भावनाओं की अभिव्यक्ति भी समय- समय पर होती रहती है। इस अवसर पर स्त्रियाँ मिलकर गीत गाती हैं। कुछ व्रत- त्योहार विशेष रुप से स्त्रिओं में लोकप्रिय होते है। मेरठ जिले में गढ़ मुक्तेश्वर नामक एक स्थान है जो गंगा के किनारे स्थित है। यहाँ कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को प्रतिवर्ष बहुत बड़ा मेला लगता है जिसे " गंगा नहान" को मेला कहते हैं। इस मेले मेंआठ - दस लाख लोग एकत्रित होते हैं और दो सप्ताह तक यह मेला खूब चलता है। प्रतिदिन लाखों नर - नारी गंगा में स्नान करते हैं। गढ़ मुक्तेश्वर को मेरठ के निवासी संक्षिप्त रुप में ' गढ़' कहते है। अत : ' गढ़गंगा' का अर्थ हुआ गढ़ मुक्तेश्वर में बहने वाली गंगा। इस से सम्बन्धित एक गीत है –

"मैं तुम से पूँछू मेरे बाले कन्हैया,
सिर का तो चीरा कहाँ भूले हो राम।1।।
गढ़गंगा पर मइया परबी पड़ी थी।
बहियै धरम कर आए हो राम। 2।
मैं तुमसे पूँछ मेरे बाले कन्हैया,
अंग तो बागा कहाँ भूले हो राम।
गढ़गंगा पै मइया परबी पड़ी थी।
बहियै धरम कर आयो हो राम। 3।"[1]

खड़ी बोली प्रदेश में प्राय: प्रत्येक घर में तुलसी की पूजा की जाती है। इसे ' तुलसा' कहते है। तुलसी जी की पूजा विशेष रुप से कार्तिक मास में की जाती है। तुलसी के सम्बन्ध में यह गीत इस प्रकार से है –

तुलसा महारानी नमो नमो।
हर की पटरानी नमो नमो।
जो जाय तुलसा सबेरे सबेरे को धामें
मन में मोय सुन्दर तन पावें। 1।
जो या तुलसा दुयहरी को गावें।
खीर खांड को भोग लगावें॥
जो या तुलसा संझा को गावें,
मनमाना सोह घर, वर पावें। 2।
नमो नमो
तुलसा महारानी नमो नमो
हर की पटरानी नमो नमो। 3।" [2]

आश्विनी (क्वार) के महीने में मेरठ तथा उसके आस- पास के स्थानों पर छोटी कुमारी लड़कियाँ गोबर और मिट्टी तथा चमकीली पन्नी से एक देवी का अंकन करती है। इसे वहाँ के लोग साँझी कहते है। साँझी वास्तव में दुर्गा का प्रतीक है। साँझी की पूजा नवरात्र के समय किया जाता है। इस देवी की पूजा कुमारी कन्यायें करती है। इस अवसर पर गाये जाने वाले एक- दो गीत इस प्रकार हैं –

"मेरी साँझी के और धौरे चावलों की मुठ्टी,
मैं तुझसे पूँछू बींझा बीबी।
तेरी कै तोले की गूँठी,
मेरे बाप गढ़ाई, मेरे बीरन मोल चुकाई।
साड़े नौ तोले की गूँठी।"[3]

इसी प्रकार खड़ीबोली क्षेत्रों में भादो की शुक्ल पक्ष की तृतीया के दिन तीज का पर्व मनाने की प्रथा है। इस अवसर पर गाये जाने वाले इस गीत में पारिवारिक झाँकी और सास की दुष्टता का वर्णन किया गया है। कोई स्त्री कहती है –

"आई री माँ छोरियों की तीज,
सासू ने धर दिया, हम पै पीसना।
फोड़ू री माँ तेरी चक्की का पाट,
बगड़ बरवेरुँ तेरा पीसना।
आया री माँ देवर जेठ,
चुग चुग चाबें मेरा पीसना।"

इस पर सास अपने पुत्र से कहती है कि ए बेटा ! बहू की बाते सुनो –

"ओछे घर की ने दिया है उलाहना;
आया री माँ मेरा भइया जाया बीर

अपने बीरन कूँ भोजन क्या करुँ
राँधो री बहुअल बथुए का साग
रोटी तो पों औ मटर मसूर की
अपने री भोजन सासू तू धर राखा ।"[4]

खड़ीबोली प्रदेशों में 'साँझी' का बहुत महत्व है । साँझी को कुमारी कन्याएँ एक महत्वपूर्ण आनुष्ठानिक त्योहार के रुप में मनाते है । आश्विन मास में कुंवारी कन्याएँ साँझी का व्रत रखती हैं जो पितृ- पक्ष के नौ दिनों तक चलता रहता है । कई जगहों पर यह देखा जाता है कि संध्या के समय घर के द्वार पर सांझी की आरती की जाती है । डॉ. सत्या गुप्ता साँझी के सम्बन्ध में लिखते है "साँझी, दीवार के कुछ भाग को लीप कर उस पर गोबर की ही रेखाओं द्वारा अंकित की जाने वाली आकृतिओं को कहते हैं । गोबर की इन रेखाओं पर गुलाब, गुलबाँस, कनेर आदि की पंखुरियाँ चिपकाकर उन्हें सजाया जाता है जिससे आकृतियों में रंगों का सामांजस्य पैदा हो जाता है । आश्विन मास के संपूर्ण पितृपक्ष में ये आकृर्तियाँ प्रतिदिन क्रमश: मिटाकर नयी बनाई जाती हैं । इस समय प्रकृति भी पूर्ण रुप से प्रफुल्लित होती है और सौंदर्यमयी होती है । वह साँझी के श्रृंगारार्थ भिन्न- भिन्न प्रकार के उपकरण एकत्र कर लेती हैं । इस प्रकार साँझी के आकृतिगत पक्ष के द्वारा कुँवारी कन्याओं को आवश्यक रुप से रेखांकन एवं रंग मिश्रण का ज्ञान उपलब्ध होता है । इन्हीं आकृतियों के सम्मुख खड़ी होकर वे प्रतिदिन संध्या को साँझी के गीतों द्वारा पूजन करती हैं, नैवेद्य चढ़ाती हैं और उसे बाँट कर खाती हैं ।"[5]

अगर देखा जाएं तो साँझी का आनुष्ठानिक पक्ष बालिकाओं के भावी जीवन की सौभाग्य- कामना से सम्बन्ध रखते है । अपनी भावी जीवन मंगलमय बनाने के लिए कुँवारी कन्याएँ आराधना करती हैं । साँझी के अवसर पर गाये जाने वाले एक गीत इस प्रकार से है –

"चैतरों पूतरों नौ नौरता साँझी के
सोलह कनागत पितरों के ।"[6]

साँझी के अनेक गीतों में भाई- बहिन के प्रेम का चित्रण भी देखे जा सकते है -

"माँ, भइया किधै ब्याहा झबूकना
वो तो, खट्टे डोल्ले ब्याहा, झबूकना
माँ, बड़अड़ कैसी आई झबूकना ।"[7]

साँझी के अवसर पर लड़कियाँ नौ दिनों तक लगातार तेल का दीपक जलाकर साँझी देवी का आरती करती हैं । आरती समाप्त होने पर देवी को भोग लगाती हैं –

"साँझी का आरता
आरता री आरता, साँझी माई आरता
सजे तेरा आरता
काहेका दिवला काहे की बाती
साँझी री क्या ओढ़ेगी, क्या पहरेगी
मिसरु पहरुँगी, स्यालू ओढूंगी
सोने की माँग भराऊँ
धन्न की साँझी, तेरे माथे लगा भाग .....।"[8]

इसी प्रकार साँझी के अवसर पर गाये जाने वाले मनोरंजन गीत है –

"हल्दी गाँठ गंठीली
भइया बहू ऊ हठीली
माँगे सोन्ने का बिन्दा
बिन्दा बैठ गढ़इयो
उप्पर मोरनी बछइयो
तले फूंगरु लटकाइयो
ऊ तो मुं मसकोड़े
उस्का मुंगड़ियो मूँह तोड़े ।"[9]

खड़ीबोली क्षेत्रों में बड़े एवं बच्चे सब मिलकर टेसू का पर्व मनाते है । डॉ. सत्या गुप्ता टेसू गीत के सम्बन्ध में लिखा है - "शारदीय नवरात्र के दिनों में सांयकाल के समय बालकों के समूह, तीन सरकंडों के आड़े बाँध कर तथा उनके बीच में सरसों के तेल का एक जलता दीपक और एक सरकंड के सिरे पर मिट्टि का पाठ करते घर- घर माँगते हुए घूमते हैं, इसे टेसू माँगना कहते हैं । माँगते समय वह यह दोहा कहते हैं –

"मेरा टेसू यहीं अड़ा, खाने को माँगे दही बड़ा ।"[10]

इसी प्रकार एक टेसू के गीत में भंग पीकर भंगी बनने की बात कहीं गई है –

"कंकड़ कुइयाँ सीतल पानी नौ मन भंग उसी में छानी
चल बे चट्टे, भर ला लोट्टे, पी पी भंग उड़ायें सोट्टे
इस लौंड्डे को चढ़ी तरंगी, पीके भंग बन गया भंगी
उल्टी गाड़ी उल्टी खाट, ये देखो बिजली के ठाट ।"[11]

आदी जनजाति के यहां तुलसी, टेसू, सांझी के रुप में अनुष्ठानिक गीत नहीं है । आदी समाज में तीज का पर्व मनाने की प्रथा भी नहीं है । अत: इन गीतों से तुलना करना सम्भव नहीं है । आदी जनजाति में पुजारी को ' मिरी' कहां जाता है । आदी समाज में उनका एक विशेष स्थान होता है । दुर- दुर के गाँवों से भी उन्हें अलग- अलग अनुष्ठान के लिए लोग बुलाते है । मिरी को समाज में विशेष सम्मान दिया जाता है । ' मिरी' गाँव में महामारी फैलने या फिर खेतों में अच्छे फसलों के लिए भी तरह- तरह के अनुष्ठान करते है । कहां जाता है कि एक बार लम्बे समय तक सूर्य छिप गया था और उसे वापस बुलाने के लिए मिरी द्वारा अनुष्ठानिक तंत्र- मंत्र किया गया था –

"बोमोंग ए नाने काजू काजू
बोमोंग ए लेन लांग कूका
कोमोंगए बोयेकू सोबू एम बोयेकू
बोमींग आपुंग पेरे को पेरे
बोमोंग आओ ए काजू काजू ।"[12]

आदी जनजाति के लोग 'मिरी' को सर्व शक्तिमान मानते है । आदी समाज में ' मिरी' के द्वारा आत्मा को वापस बुलाने की बात भी कही जाती है । इसे 'आयीद मिरी' कहते है । ' आयीद मिरी का आयोजन करते वक्त 'मिरी' के हाथ में 'योकसा' होता है । यह 'योकसा' तलवार के आकार का होता है आदी लोग विश्वास करते है कि 'मिरी' आत्माओं से संवाद करते है । परिवार में अगर लम्बें समय तक कोई बीमार पड़ जाता है तथा वह कमजोर हो जाता है । ऐसी अवस्था में उस व्यक्ति की आत्मा उससे दूर चली जाती है और ' मिरी' फिर से उसके आत्मा को वापस बुलाने के लिए यह गीत गाते है –

"गुमीने जोलजो सिगोने सोलोना
सोयीने जोलजो सिगसेना सोलोना
आबानांग आजी मिउंगे पूबीन लांकुल
ओलुए मिउंग पूबीने लांकुल
गुमीन लेति को मेरीं दाक्कू
सोयीने लाकओंग मेबोन दाक्कू

आबेनानेंग .....अबेना ..... गूमीना .....जोलजो
आजी पूलूंग पूबीन लांकू
कीबे पूलूंग पूबीन लांकू
आने ए बयूए कतूंगे एलोगे पेदूंगे ।"[13]

इसी प्रकार 'मिरी' द्वारा आत्मा बुलाने का एक और गीत है –

"सीलो रोगूम सेदूम
किना आमी सीम सूपाक गेलोके आई मोते कूका
दोको तीनकों ना ताकेनेम
सीलो बोसी बोरांगेम तोम दूम – सूला
ऐसोको रोगुम सूनादूम
ऐसो सीम दोपे – दोपे ने
इपोम इजींग नीजी – नीपोंग
ऊयू दोना ताकामें सीम ऐसो दोना लांका
आमी सीम आई मोतो कूका ।"[14]

खड़ी बोली क्षेत्रों में भी भूत – प्रेत को भगाने के लिए हनुमान जी को याद किया जाता है। इस सम्बन्ध में यह गीत प्रचलित है –

"हनुमांन हर के प्यारे
कौन तेरी माता कौन पिता है,
किन्ने तेरा नाम धरा है
अंजी माता पवन पिता है, उन्ने मेख नाम धरा है .....।
जय जय जय हनुमान लला की
दूष्ट दलन रघुनाथ कला की
जाके बल से गिरिवर कांपे
रोग दोस जाके निकट नई आवे .....।"[15]

मन्त्र व टोने – टोटके को एक अदभुत शक्ति के रुप में माना जाता है। यह मन्त्र एवं टोने – टोटके हमारे लोक – जीवन की एक प्रमुख अंग के रुप में स्वीकारी गयी है। हमारे जीवन में इसका प्रयोग विभिन्न अवसरों पर अपनें कष्टों का निवारण के लिए किया जाता है। जैसा की डॉ. सत्येन्द्र ने 'भारतीय साहित्य' में कहां है कि "समस्त, वेदमंत्र, संस्कार – अनुष्ठान से सम्बन्ध रखते हैं। मन्त्रों के साथ यह टोने टोटके की भावना लगी हुई है कि यदि इनका उच्चारण हम सविधि करेंगे तो उनसे हमें अवश्य ही फल मिलेगा। मूलत : मन्त्रानुष्ठान टोने के एक आवश्यक अंग थे।"[16]
यह मन्त्र व टोने – टोटके हमेशा दूसरों के लिए मंगलकारी ही हो ऐसी नहीं है। यह कभी – कभी दूसरे के लिए विघ्नकारी एवं अनिष्टकारी भी हो जाते है। चुल्हा बांध्ने के सम्बन्ध में एक मंत्र इस प्रकार से है –

"जल बांधू जल वापु बांधु जल की बांधू काई
चार खूंट चूल्हे की बांधू और बांधू अगनी माई ..... ।"[17]

इन तन्त्र – मन्त्रों में रागों का निवारण तथा शरीर की रक्षा की कामना भी किया जाता है –

"इस पिण्ड को छेद करो,
भूत – परेत हर ले सामी
प्रचण्ड बाण मारो सामी
इस पिण्द को भूत – परेत जर,
उखेड़ दो सामी
मूड को मुंडादे,
गात का जर उखेड़ दो,
पीठ का दर्द उखेड़ दे
छाती का दरद उखेड़ो।
बारे बिथा छत्तीस बलाए उखेर दो।
मेरे सतरु बैरी का मुं
चोर के हात पैर बांधो
मेरे बैरी को चार पहर बांधो
मेरी राम करो रखवाली ..... ।"[18]

खड़ी बोली क्षेत्रों में यह विश्वास है कि जादू – टोना और तन्त्र – मन्त्र के प्रभाव को जादू – टोना एवं तन्त्र – मन्त्र से ही समाप्त किया जा सकता है। इसका एक उदाहरण निम्न लोक गीत में देखे जा सकते है –

"ऊ सरणागतो नमो : नम : ।
पांच पंडे छटे नाराण पूज्जा री
बासुकी नाग लोक की माता
सरणा गतो नमो : नमे:
उल्लू की आंख करे
सेटलो की पाख करें
काणा बलद की गोब्बर करैट
जाओ तम बैरी के घर
जो बैर करे सो बैरी होय जो जैस्सा जले तिल जैस्सा गढ़े
जिसका बाण हो वे, उससे वोई मरे ..... । "[19]

इस गीत में मन्त्र एवं टोने – टोटके में प्रयोग होने वाले वस्तुएं – जैसे की उल्लू की आखँ, सेटुला पक्षी के पंख, काणे बैल के गोबर आदि का उल्लेख किया गया है।

साहायक ग्रंथ सूची

1. डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, हिन्दी प्रदेश के लोक – गीत, साहित्य भवन (प्रा.) लिमिटेड, इलाहाबाद – 211003, पृष्ठ – 307
2. वही, पृष्ठ – 307
3. वही, पृष्ठ – 308
4. वही, पृष्ठ – 309
5. डॉ. सत्या गुप्ता, खड़ीबोली का लोकसाहित्य, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद, सन् – 1965, पृष्ठ – 65
6. वही, पृष्ठ – 103
7. वही, पृष्ठ – 104 – 105
8. वही, पृष्ठ – 106
9. वही, पृष्ठ – 106 – 107
10. वही, पृष्ठ – 102
11. वही, पृष्ठ – 102 – 103
12. जेबीना ताकी, आदी लोक साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन, लोक गीतों के विशेष संदर्भ में, शोध – प्रबंध, राजीव गांधी विश्वविद्यालय, ईटानगर, पृष्ठ – 200

13. वही, पृष्ठ – 201
14. सचिन राय, एन एस्पेक्ट्स आँफ पादाम मिन्योंग कल्चर, डायरेक्टरेट आँफ रिसर्च, गवर्मेंट आँफ अरुणाचल प्रदेश, ईटानगर, प्रथम संस्करण – 1960, पृष्ठ - .....
15. डॉ. कविता त्यागी, कौरवी प्रदेश की लोक संस्कृति, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण – 1995, पृष्ठ – 88
16. डॉ. सत्येन्द्र, भारतीय साहित्य, अंक जनवरी, 56, पृष्ठ – 42 – 43
17. उपरि संख्या – 15, पृष्ठ – 92
18. उपरि संख्या – 15, पृष्ठ – 95 – 96
19. उपरि संख्या – 15, पृष्ठ – 94